ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 17 अंक 16 कुल पृष्ठ-8 01 से 07 सितम्बर, 2022 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853123 सम्वत् 2079 भा. शु.-05

देश की स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्य समाज की ऐतिहासिक भूमिका रही है

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी स्वतंत्रता आन्दोलन के पितामह थे

– स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज के संस्थापक युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि 'विदेशी राजा कितना ही अच्छा क्यों न हो वह स्वदेशी राजा से बढ़कर नहीं हो सकता। विदेशी राजा चाहे माता–पिता के समान व्यवहार करे तो भी स्वदेशी राज्य ही सर्वोपरि होता है। उनके इस कथन का भारतीय जनमानस के मनःपटल पर ऐसी छाप पड़ी कि लोगों के दिलों में स्वदेशी राज्य की कल्पना व अभिलाषा जागृत हो गई। बड़े गर्व के साथ हम यह कह सकते हैं कि भारत में स्वदेशी राज्य (स्वराज्य) का प्रथम मंत्र फूंकने वाले राष्ट्र पितामह महर्षि दयानन्द ही थे तो यह कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

यह भी एक ऐतिहासिक तथ्य है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के गुरु स्वामी विरजानन्द जी महाराज ने 1857 की क्रांति की असफलता के पश्चात् स्थानीय सर्वखाप पंचायतों, छोटी रियासतों के राजे–रजवाड़ों और समाज के गणमान्य महानुभावों को बड़ी–बड़े बैठकें करके स्वतंत्रता आन्दोलन की प्रेरणा दी थी। स्वामी विरजानन्द जी की इस महत्त्वपूर्ण भूमिका के सम्बन्ध में कई इतिहासकारों ने अपनी पुस्तकों में महत्त्वपूर्ण ढंग से उद्धृत भी किया है। अपने गुरु के इस विचार को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपनाया और उन्होंने भी इस दिशा में अपनी विशेष भूमिका निभाई। वे अपने व्याख्यानों में अंग्रेजी शासन के द्वारा भारतीयों के हो रहे शोषण एवं अत्याचारों को प्रसंगवश कहते भी थे।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने विदेशी राज्य का विरोध व स्वदेशी राज्य की श्रेष्ठता की चर्चा केवल सत्यार्थ प्रकाश में ही नहीं की अपितु अपनी अन्य पुस्तकों में भी इसका जिक्र किया। ऐसा देखने एवं सुनने को मिलता है कि स्वामी दयानन्द जी के पूर्व स्वदेश व स्वराज्य की चर्चा भारत के किसी मनीषी के ग्रंथ में नहीं है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी पहले महापुरुष थे जिन्होंने 'विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं, स्वदेशीय राज्य सर्वोपरि होता है' आदि संदेशों को प्रस्तुत कर देश की आजादी की नींव रखने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द जी की विचारधारा एवं आर्य समाज के सिद्धान्तों ने देश में स्वतंत्रता की लौ को तेज करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, लौह पुरुष स्वामी स्वतंत्रानन्द, शेरे पंजाब लाला लाजपत राय, श्यामजी कृष्ण वर्मा, भाई परमानन्द, शहीदे आजम भगत सिंह व उनके दादा सरदार अर्जुन सिंह, अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ, राजगुरु, सुखदेव व चन्द्रशेखर आजाद आदि के नाम उल्लेखनीय हैं जिन्होंने आर्य समाज के क्रांतिकारी विचारों से प्रभावित होकर देश को आजाद कराने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। सशस्त्र क्रांति एवं महात्मा गांधी के सत्याग्रह दोनों ही मोर्चों पर अर्थात गरम दल व नरम दल दोनों दलों में आर्य समाज की पृष्ठभूमि के ही लोगों की भरमार थी। आर्य समाज के प्रभाव से ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

स्वतंत्रता आंदोलन आरंभ किया।

स्वामी दयानन्द जी के शिष्य श्यामजी कृष्ण वर्मा ने देश से बाहर रह कर भारत की स्वतंत्रता की वेदी पर अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए अनेक क्रांतिकारियों को तैयार किया। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने इंग्लैण्ड में 'इण्डिया हाउस' की स्थापना की जहां अनेक क्रांतिकारी जाकर रहा करते थे। आर्य समाज के प्रचारक देश–विदेश में भारतीयों को संगठित करने का कार्य करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे।

आर्य समाज के क्रांतिकारियों की लम्बी श्रृंखला से जुड़े कल्याण मार्ग के पथिक अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करके देश को आजाद कराने के लिए ब्रह्मचारियों को तैयार करने का कार्य किया। गुरुकुलों में राष्ट्रभक्ति की शिक्षा देकर स्वतंत्रता संग्राम के लिए क्रांतिकारी (बम–रूपी विद्यार्थी) तैयार किए जाते थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी शुद्धि आन्दोलन चला कर लाखों विधर्मियों को पुनः वैदिक धर्म में दीक्षित किया और सभी को राष्ट्र की एकता और अखण्डता के लिए कार्य करने की प्रेरणा दी।

आर्य समाजी भाई परमानन्द महान क्रांतिकारी थे। वे रास बिहारी बोस इंडियन नेशनल आर्मी, जो बाद में आजाद हिन्द फ़ौज' कहलाई उसे मुख्यधारा से जोड़ने का कार्य कर रहे थे। पंडित राम प्रसाद बिस्मिल उत्कृष्ट साहित्यकार, कवि एवं महान क्रांतिकारी थे, जिन्होंने हिन्दुस्तान रिपब्लिकन आर्मी की स्थापना की थी। बिस्मिल के प्रभाव से उनका पूरा समूह ही आर्य समाज के विचारों से प्रभावित हुआ। अपने क्रांतिकारी जीवन में उन्होंने कई पुस्तकें लिखकर उन्हें प्रकाशित कराया। उन पुस्तकों को बेच कर जो पैसा मिलता था उससे उन्होंने हथियार खरीदे और उन हथियारों का उपयोग ब्रिटिश राज का खात्मा करने के लिए किया। उनके दिल में सदा एक ही अरमान था–

'सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है ज़ोर कितना बाजु–ए–कातिल में है।'

आजादी के जंग में महान क्रांतिकारी शहीदे आजम भगत सिंह के दादा सरदार अजीत सिंह का नाम भी अग्रिम पंक्ति में आता है। भगत सिंह ने कहा था कि मेरे दादा जी ने जनेऊ के समय ही मुझे देश को समर्पित कर दिया था। जलियांवाला बाग हत्याकांड को देख कर भगत सिंह अत्यंत भावुक हुए और उनका खून खौल पड़ा। इस हत्याकाण्ड के बाद उन्होंने नौजवान भारत सभा बनाई और चंद्रशेखर आज़ाद, सुखदेव और राजगुरु से मिल कर लाला लाजपत राय की हत्या का बदला लेने की योजना बनाई और सांडर्स को गोली मार कर उसके द्वारा किये गये जघन्य पाप का उसे दण्ड दिया।

आजादी के दीवानों में ठाकुर रोशन सिंह एवं राजेन्द्र सिंह लाहिड़ी को भी आर्य समाज से ही बलिदान होने की प्रेरणा मिली और काकोरी काण्ड में इन दोनों को फ़ांसी हुई। इस प्रकार आर्य वीरों की एक लम्बी श्रृंखला है जिन्होंने राष्ट्र–यज्ञ में स्वयं की आहुति दी। स्वाधीनता इतिहास के लेखकों ने भी राष्ट्रवादी संगठन आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी के अनुयायियों की शहादतों को सहर्ष स्वीकार किया। परन्तु आजादी के 75 वर्ष बीत जाने के बाद आज जिस तरह से आजादी के आन्दोलन में अग्रणी भूमिका निभाने वाले संगठन एवं उनके अनुयायियों को नजरअंदाज किया जा रहा है यह अक्षम्य अपराध है। हम सबको संगठित होकर आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द जी के विचारों एवं सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य करना चाहिए तथा स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्य समाज संगठन एवं उनके अनुयायियों की भूमिका को उद्धृत करना चाहिए जिससे आम जनमानस को सत्य की जानकारी हो सके। आजादी के आन्दोलन में भाग लेने वाले महापुरुषों का अपमान करके इतिहास को बदला नहीं जा सकता। सत्य को छिपाया नहीं जा सकता। देश के अनेक बुद्धिजीवी आज भी इस बात को डंके की चोट पर कहते एवं मानते हैं कि आजादी के आन्दोलन में सबसे अधिक सक्रिय सहयोग, समर्पण एवं योगदान आर्य समाज संगठन का रहा है।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

क्रान्ति के पुरोधा ब्रह्मर्षि स्वामी विरजानन्द सरस्वती

—श्रीमती विश्ववारा, एम. लिट्

दो शताब्दी पूर्व, (सन् १७७८ ई०) में जन्म लेकर, छह वर्ष की अल्पायु में ही शीतला माता के प्रकोप से दोनों आंखें खो देने वाला अनाथ बालक ब्रजलाल सारे देश की दृष्टि बन जाएगा, यह कौन कह सकता था? माता–पिता के न रहने पर उचित देखभाल के अभाव में १३–१४ वर्ष की अवस्था में घर से भाग जाने वाला ढोंग, पाखण्ड और अन्धविश्वास को भगाने का दृढ़–संकल्प अपने शिष्यों में फूँका करेगा, किसने कल्पना की थी? किन्तु होनी कल्पना की मोहताज तो नहीं है न! ब्रजलाल ऋषिकोश पहुंच गया और १२ वर्ष तक कठोर तप साधना की। आठ–आठ प्रहर गंगा जल में खड़े–खड़े निरन्तर गायत्री जप करना और साधु–सन्तों, विद्वानों की संगति उसकी दिनचर्या बन गई। कनखल के प्रबुद्ध सन्त स्वामी पूर्णानन्द जी से विद्याध्ययन, देश–प्रेम की शिक्षा और वेद–प्रचार की अद्वितीय लगन पाकर यह युवक 'दण्डी विरजानन्द' बन गया।

एक बार तीर्थ–यात्रा करते हुए दण्डी जी सौरों पहुंचे। वहां अलवर नरेश इनके विष्णु–स्रोत के पाठ और विद्वत्ता से इतने प्रभावित हुए कि नित्यप्रति ३ घण्टा संस्कृत पढ़ने की शर्त लगाने पर भी अपने साथ ले गये। अलवर पहुंचकर दण्डी जी ने संस्कृत अध्यापन के साथ–साथ 'शब्द–बोध' नामक ग्रन्थ की रचना की जो आज भी वहां सुरक्षित है। एक दिन नरेश संस्कृताध्ययन के लिए उपस्थित न हो सके तो उसी दिन दण्डी जी ने अलवर त्याग दिया।

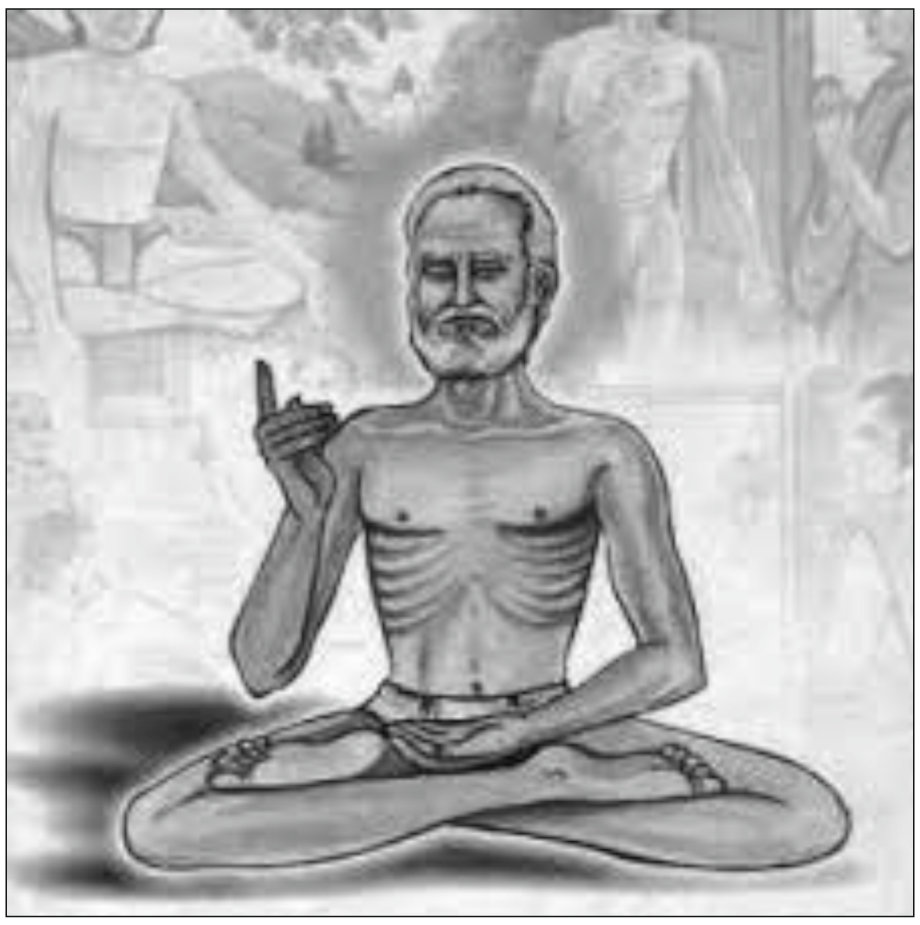

अलवर–प्रवास के मध्य ही अंग्रेज रेजीडेण्ट का भारतीयों के प्रति शुष्क व्यवहार देखकर उन्होंने अंग्रेजी राज्य के बहिष्कार का निश्चय किया। इसके लिए उन्होंने मथुरा को अपना केन्द्र चुना क्योंकि यह हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थ स्थान था तथा दिल्ली, मेरठ, लखनऊ, आगरा, अजमेर जाने वाले यात्री मथुरा होकर ही जाते थे। मथुरा में रहते हुए उनके विचारों से प्रभावित होकर बहुत से हिन्दू–मुसलमान उनके शिष्य बन गये थे। स्वामी विरजानन्द को 'भारत गुरुदेव' की उपाधि तत्कालीन साधु–समाज ने प्रदान की थी। उनकी विद्वत्ता के सम्बन्ध में अंग्रेजी के एक लेखक ने भी कहा है– ''स्वामी विरजानन्द सरस्वती एक महान् पुरुष थे। अपने समकालीन भारतीय विद्वानों के वे सिरमौर थे। वह एक महान् गुरु थे जिनकी जोड़ का देश में समकालीन गुरुओं में अन्य कोई न था।''

स्वामी विरजानन्द स्वभाव से उग्र थे। सत्य के इस उपासक को ढोंग और पाखण्ड से बड़ी घृणा थी। प्रबल इच्छाशक्ति के इस धनी का यह दृढ़ विश्वास था कि समस्त दुःखों और कष्टों का मूल स्रोत अज्ञान, अंधविश्वास और छल–कपट है। अतः उन्होंने इन सब कुरीतियों का निराकरण कर लोगों के हृदय को सत्य से प्रकाशित करने का बीड़ा उठा लिया। वे अपने शिष्यों से कहा करते थे कि ''मैं तुम में उस आग को जला रहा हूँ जो समय आने पर भारत में व्याप्त अंध–विश्वासों, पाखण्डों और मिथ्या–विचारों को भस्मीभूत कर देगी।''

महर्षि दयानन्द ने समाज और राष्ट्र के लिये जो कुछ किया उस सबके पीछे प्रेरणा गुरु विरजानन्द की ही थी। गुरु दक्षिणा के रूप में लौंग लाने वाले अपने इस शिष्य से दण्डी जी ने प्रतिज्ञा कराई थी कि– ''भारत देश में दीन–हीन जन अनेक विध दुःख पा रहे हैं, जाओ उनका उद्धार करो। मत–मतान्तरों के कारण जो कुरीतियाँ प्रचलित हो गई हैं, उनका निवारण करो। आर्य जनता की बिगड़ी हुई दशा को सुधारो। आर्य–सन्तान का उपकार करो। मनुष्यकृत ग्रन्थों में परमात्मा और ऋषि–मुनियों की निन्दा भरी पड़ी है। आर्ष ग्रन्थों में इस दोष का लेश नहीं। आर्ष और अनार्ष ग्रन्थों की यही बड़ी परख है।'' वैदिक धर्म का प्रचार और देशोद्धार करने की प्रतिज्ञा ही गुरु की दक्षिणा थी और इस प्रतिज्ञा को पूर्ण करने में ही स्वामी दयानन्द ने अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया।

सन् ५७ की तैयारी

सन् १८५७ में ब्रिटिश शासकों के विरुद्ध पहला भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम १० मई को मेरठ से प्रारम्भ हुआ। इसकी तैयारी तो पाँच–छह वर्ष पूर्व से ही हो रही थी। इस संग्राम का संयोजन गुरु–शिष्य परम्परा में चार–पीढ़ी के वेदज्ञ योगी आर्य संन्यासी कर रहे थे, जिनके नाम हैं– (१) स्वामी ओमानन्द, (२) स्वामी पूर्णानन्द (३) स्वामी विरजानन्द और स्वामी दयानन्द। उस समय इन चारों संन्यासियों ने स्वतन्त्रता–प्राप्ति के लिए दो हजार साधु प्रचार के लिए तैयार किए थे। ये साधु सैनिकों की छावनियों में, क्रान्तिकारियों में और हरिद्वार, गढ़मुक्तेश्वर, मथुरा आदि के तीर्थ स्थानों पर जाकर जनता में भी अंग्रेजों के दमन के विरुद्ध प्रचार करते थे। इनमें हिन्दू और मुसलमान दोनों प्रकार के साधु थे। **(द्रष्टव्य- लेख-आर्य जगत् अंक-१८ मई, १९८०)** ऐसे संकेत मिलते हैं कि ये सारे साधु सन् १८५२ से ही सैनिक छावनियों में स्वतन्त्रता की योजना का प्रचार करने लग गये थे। साथ ही गुप्तचर का कार्य भी करते थे और अंग्रेजों की गतिविधियों का ब्यौरा अपने साधु–समाज के प्रमुख को देते रहते थे।

यद्यपि स्वामी विरजानन्द तथा स्वामी दयानन्द आदि संन्यासियों का नाम क्रान्ति के इतिहास में नहीं आता तथापि यह तथ्य सर्वविदित है कि सैनिक छावनियों में कमल के फूल और चपाती वितरित करने वाले अज्ञात साधुवेषधारी संन्यासी थे और वे इसका प्रयोग ब्रिटिश विरोधी प्रचार के लिये करते थे। चौधरी कबूलसिंह, मन्त्री सर्वखाप पंचायत ने पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा की नई दिल्ली से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'आर्य मर्यादा' के सम्पादक (पं० जगदेव सिंह सिद्धान्ती) को मीर मुश्ताक मीरासी का उर्दू में लिखा हुआ पत्र प्रकाशनार्थ भेजा था, जिसका सार इस प्रकार है– ''सन् १८५६ में मथुरा तीर्थ नगरी में एक पंचायत हुई, उसमें हिन्दू–मुसलमान तथा अन्य धर्मावलम्बी भी सम्मिलित हुए थे। इसमें एक हिन्दू 'दरवेश' को पालकी में बिठाकर लाया गया। उनके आने पर सब लोगों ने उनका सम्मान किया, तथा जब वह चौकी पर बैठ गए तब सभी हिन्दू–मुस्लिम फकीरों ने उनकी चरण–वन्दना की। सभी उपस्थित पंचायत के लोगों ने उनका सम्मान किया। सबकी अभ्यर्थना के बाद नाना साहब पेशवा, मौलवी अजीमुल्लाखान, रंगू बाबू और तत्कालीन बादशाह बहादुरशाह ज़फर के पुत्र फिरोजशाह ने मिलकर इन संन्यासी महोदय के सम्मान में सोने की अशर्फियां भेंट–स्वरूप दीं। इसके बाद एक हिन्दू तथा एक मुस्लिम फकीर ने यह घोषणा की कि अब हमारे गुरु आप सब उपस्थित सज्जनों को सम्बोधित करेंगे जो हमारे राष्ट्र के लिए उपयोगी होगा, अतः ध्यान से सुनें। यह संन्यासी बहु भाषाविद् तथा हमारा और राष्ट्र का सम्मानित व्यक्ति है जो ईश्वर की कृपा से ही हमारे मध्य उपस्थित हुआ है।''

'इस वृद्ध संन्यासी ने सर्वप्रथम ईश–स्तुति की और उसका उर्दू में अनुवाद किया। तत्पश्चात् उपस्थित सज्जनों को संबोधित कर कहा कि स्वतन्त्रता स्वर्ग है तथा परतन्त्रता नरक के समान है। स्वराष्ट्र शासन की अपेक्षा अधिक अच्छा है। क्योंकि विदेशी शासन में रहना बेइज्जती है। हमें किसी जाति से घृणा नहीं अपितु परतन्त्रता से घृणा है। क्योंकि विदेशी, खासकर 'फिरंगी', हमें गुलाम समझकर पशुवत् व्यवहार करते हैं। ईश्वर के राज्य में सभी मनुष्य भाई–भाई हैं किन्तु विदेशी शासन हमें भाई की अपेक्षा गुलाम समझता है। यों तो फिरंगियों में बहुत–सी अच्छी बातें हैं, किन्तु राजनीतिक दृष्टि से वे अपने वचन धर्म आदि का पालन नहीं करते। वे अपने राष्ट्र की समृद्धि के लिए इस देश का और इसके वासियों का शोषण करते हैं। अतः हिन्द वासियों से मेरी प्रार्थना है कि तुम सब भी अपने राष्ट्र से वैसा ही प्रेम करो जैसा अपने धर्म से करते हो। देश भक्त बनकर प्रत्येक देशवासी के साथ भाई जैसा ही सम्बन्ध बनाओ। हिन्दुस्तान में रहने वाले सभी हिन्दी भाई हैं।''

नोट– इस महात्मा संन्यासी का नाम मालूम करने पर ज्ञात हुआ कि इनका नाम स्वामी विरजानन्द था और वे बहुत समय से मथुरा में रहते हैं, संस्कृत की शिक्षा देते हैं तथा ईश्वर के भक्त हैं।''

तसनीफ करदह मीरमुश्ताक मीरासी
कासिद सर्वखाप पंचायत

इस प्रकार स्वामी विरजानन्द क्रान्ति के भी प्रथम पुरोधा थे। अंग्रेजों ने तो इस प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम को 'गदर' का नाम दिया था। किन्तु स्वामी विरजानन्द ने इस योजना को 'राज बदलो क्रान्ति' या 'जंगे आज़ादी' का नाम दिया था। उपरोक्त कमल और रोटी के अतिरिक्त रेशम, खरबूजे और तीतर का निशान भी प्रचलित किया था। अभिप्राय यह था कि देश को रेशम के समान मजबूत चमकदार बनाओ और खरबूजे के समान ऊपर की धारी अलग–अलग पर अन्दर से हिन्दू–मुसलमान सब एक रहो, तीतर के समान शत्रु को अपने देश की सीमा से बाहर निकालो।

८२ वर्ष की आयु में, सन् १८६० में, दिवंगत इस सन्त के ग्राम गंगापुर (करतारपुर, जालन्धर पंजाब) में श्री विरजानन्द स्मारक भवन की स्थापना करना या १४ सितम्बर १९७० को भारत सरकार द्वारा डाक टिकट जारी करना साधुवाद के योग्य अवश्य है, किन्तु क्या उतने भर से हमारे कर्त्तव्य की इतिश्री हो जाएगी?

प्रथम स्वाधीनता आन्दोलन में आर्य समाज की भूमिका

—सुरेन्द्र सिंह कादियाण

विश्व में भारत 'सोने की चिड़िया' नाम से प्रसिद्ध था अतः विश्व के हर महान् विजेता का स्वप्न भारत को लूटने का रहा है। लूट का यह सिलसिला सिकन्दर महान् के भारत आक्रमण से स्पष्ट रूपेण इतिहास में मिलना शुरू होता है। यूनानियों के बाद हूण, शक, पठान, मुस्लिम आदि आक्रमणकारी बन कर आये फिर डच, पुर्तगाली, फ्रांसीसी व अंग्रेज भारत को लूटने के इरादे से आये। आज भी यद्यपि कहने को भारत आज़ाद है लेकिन उपनिवेशवादी शक्तियाँ आज भी उदारीकरण, भूमण्डलीकरण, निजीकरण के नाम पर भारत में अपने पाँव पसारे बैठी हैं और ये राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षिक, धार्मिक व सामाजिक सभी क्षेत्रों में शोषण करने को आतुर हैं भले ही शोषण के तरीके बदल गये हों, उनका रूप परिवर्तन हो गया हो।

प्रथम स्वाधीनता आन्दोलन पर जब विचार होगा तो उसमें १८५७ के गदर के कारणों, घटनाओं व परिणामों पर तो विचार होगा ही इसके साथ–साथ यह जानना भी आवश्यक होगा कि गदर के क्रम में देश में सांस्कृतिक पुनर्जागरण की जो लहर पैदा हुई और स्वाधीनता का दूसरा दौर शुरू होने पर अन्ततः हमें जो आज़ादी मिली क्या उस आज़ादी ने देश के एक आम नागरिक के लिए रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा व न्याय–इन सात मूलभूत सुविधाओं को जुटाने में कुछ अहम भूमिका निभाने में सफलता अर्जित की है? यदि इस सवाल का उत्तर नकारात्मक मिलता है तो यह स्थिति हमें यह सोचने पर विवश करेगी कि क्या देश में स्वाधीनता का तीसरा दौर शुरू नहीं होना चाहिए?

भारत विविधताओं का राष्ट्र रहा है और यह विविधता सांस्कृतिक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है बल्कि राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक, धार्मिक व दार्शनिक सभी क्षेत्रों में देखी जा सकती है। स्वाधीनता आन्दोलन के विश्लेषण या मूल्यांकन में भी यह विविधता दृष्टिगोचर होती रही है। स्वाधीनता आन्दोलन के प्रथम दौर को अलग–अलग नज़रिये से देखने की प्रवृत्ति इतनी अधिक विकसित हो गई है कि उसे लेकर अनेक प्रकार की भ्रान्तियाँ उत्पन्न होने लगी हैं। कम्युनिस्ट अपने नज़रिये से, धर्मनिरपेक्षतावादी कांग्रेस अपने नजरिये से, समाजवादी अपने नजरिये से, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने नजरिये से, सिख व ईसाई अपने नजरिये से, दलित व मुस्लिम अपने नजरिये से इस स्वाधीनता आन्दोलन का विश्लेषण या व्याख्या या मूल्यांकन कर रहे हैं। इनका उद्देश्य मात्र अपने–अपने दर्शन, आन्दोलन व संघर्ष को प्रेरणा, ताकत, प्रासंगिकता, प्रामाणिकता देना है जिससे कि उनका अस्तित्व बना रहे, बचा रहे। अतः इस स्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि स्वाधीनता आन्दोलन के प्रथम दौर का विश्लेषण, व्याख्या और मूल्यांकन किसी वाद विशेष से मुक्त होकर, किसी एकाकी व संकीर्ण विचारधारा से सर्वथा मुक्त होकर, राष्ट्र के व्यापक हितों को दृष्टिगत रख कर किया जाये। यह काम जितनी आसानी से, निष्पक्षता से, प्रामाणिकता से और विश्वसनीयता से आर्यसमाज से प्रभावित कोई चिन्तक कर सकता है वैसा कोई अन्य नहीं कर सकता। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि आर्य समाज का सर्वाधिक बल सत्य के प्रति आग्रही होना है। दूसरे, उसका मानवीय और राष्ट्रीय पक्ष अत्यंत प्रबल एवं प्रबुद्ध रहा है। तीसरे, वह किसी साम्प्रदायिक आग्रह का पक्षधर नहीं रहा है। धार्मिक सामाजिक और शैक्षिक क्षेत्र में उसके विचार और गतिविधियाँ जो भी रही हैं वे किसी भी प्रकार के वाद, पूर्वाग्रह और प्रतिबद्धता से मुक्त रही हैं और हर वर्ग के लोगों ने चाहे वे देशी रहे हों या विदेशी उसका लोहा माना है।

१८५७ का गदर वस्तुतः एक असाधारण स्वाधीनता संग्राम था जो एक विदेशी ताकत के खिलाफ मात्र मुस्लिम नवाबों व हिन्दू रजवाड़ों ने नहीं लड़ा था बल्कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी के काले कारनामों, शोषणकारी नीतियों और दमनकारी व्यवहार से प्रताड़ित, हताश व दुखी किसानों व श्रमिकों, सैनिकों व दलितों ने भी इसमें अपनी भागीदारी सक्रियता से निभाई थी। शहरी, ग्रामीण और आदिवासी सभी क्षेत्रों के लोग इसमें शरीके सफर रहे। महिलाओं, नौजवानों, बच्चों व बूढ़ों की भागीदारी भी बराबर बनी रही। गृहस्थी और संन्यासी सभी इस संग्राम में कूदे थे। इस स्वाधीनता संग्राम से जुड़े अनेक रहस्य आज भी रहस्य बने हुए हैं। इस संग्राम के साक्षी रहे अनेक दस्तावेज आज भी अनछुए पड़े हैं। जो गुप्त दस्तावेज इस दौरान इंग्लैण्ड भेजे गये वे सभी उपलब्ध नहीं कराये जा सके हैं। उर्दू, अरबी, फारसी के अनेक सबूत भाषा की समस्या के कारण अभी तक उपेक्षा के शिकार बने पड़े हैं। वस्तुतः १८५७ का गदर एक जन–विद्रोह था जिसे अत्यंत घृणित एवं पाश्विक उपायों से अंग्रेजों ने कुछ गद्दार भारतीयों के सहयोग से कुचल डाला था। जुल्म की इंतिहा यह थी कि पेशावर से कोलकाता तक सड़क के हर पेड़ पर कम से कम एक देशभक्त की उल्टी लाश अवश्य लटकायी गई थी जिसे देख भारतीय मन आतंकित हो सके और विद्रोह का रास्ता छोड़ दे। कानपुर के सेंट्रल पार्क का 'बूढ़ा बरगद' साक्षी रहा है कि एक ही दिन में सैंकड़ों देशभक्तों की लाशें उसकी शाखाओं पर लटकाई गई थीं क्योंकि कानपुर देशभक्तों का खास मुकाम था। जिसकी रहनुमाई में यह संग्राम लड़ा गया वह था अंतिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर जो उसके अपने ही दामाद के विश्वासघात के कारण गिरफ्तार हुआ और उसके शहजादों की निर्मम हत्या कर उनके शीश एक थाली में सज़ा कर इस बूढ़े शहंशाह के सामने पेश किये गये। इस तरह के एक–दो नहीं लाखों माँ–बाप के लाल इस संघर्ष में छीन लिए गये थे। भारत की शायद ही कोई जाति या वर्ग ऐसा बचा होगा जिसने अपने रक्त का अर्ध्य आज़ादी की देवी पर न चढ़ाया हो। कुछ सिक्ख रियासतों ने अंग्रेजों को खुली मदद न दी होती, कुछ राजपूत रिसायतें किंकर्त्तव्यविमूढ़ता का शिकार न बनी होतीं और नेपाल के गोरखे अंग्रेजों के रक्षा कवच न बने होते तो जो आज़ादी हमें १९४७ में जाकर मिली वह नब्बे साल पहले ही १८५७ में मिल गई होती। लेकिन विफल होकर भी इस जंगे आज़ादी ने अपना पुरजोर असर दिखाया जिसकी वजह से सत्ता का हस्तांतरण ईस्ट इण्डिया कम्पनी से छिन कर ब्रिटिश ताज को प्राप्त हुआ और भारत पर इग्लैण्ड की संसद का सीधा नियन्त्रण हो गया। महारानी विक्टोरिया ने अपने घोषणा–पत्र में भारतीय प्रजा को कुछ रियायतें देने की घोषणाएँ कीं लेकिन शातिर अंग्रेज अब और अधिक चालाकी, मक्कारी व दगाबाजी से काम करने लगा था। उपनिवेशवाद का बीभत्स रूप अब किस्तों में भूमि राजस्व विभाग, नई हिन्दुस्तानी फौज, खुफिया संस्थान व पुलिस, नई न्याय व्यवस्था जिसके अन्तर्गत निजी कानून, नागरिक व आपराधिक दंड संहिता बनी, वनों, जनजाति क्षेत्रों, बागानों, नमक क्षेत्रों, खदानों, बैंकों की स्थापना व कर्ज देने सम्बन्धी ढेरों कानून बने। भूमि अधिग्रहण करने, देशी और विदेशी व्यापार के नये नियम व तट कर बने। इन उपनिवेशवादी कानूनों को लागू करने के लिए एक नई नौकरशाही की भी स्थापना हुई। ऐसी शिक्षा व्यवस्था लागू की गई जो इस नौकरशाही को चुस्त और मजबूत बना सके, उपनिवेशवादी हितों की रक्षा कर सके, विदेशी वस्तुओं का मूल्यांकन यूरोपीय दृष्टि से कर सके, ज्ञान–विज्ञान और प्रगति के सभी स्रोतों का उद्गम यूरोप से होना मान सके, आर्थिक पूंजीवादी व्यवस्था के तहत चैंबर्स ऑफ कामर्स, जमींदारी सोसाइटी, बागान मालिक सोसायटी और वेस्ट मिनस्टर शैली के संसदीय लोकतंत्र को तरजीह देते हुए राजनीतिक दलों की स्थापना कर सके। 'फूट डालो राज करो' का एक नया तन्त्र विकसित करते हुए इन उपनिवेशवादी गुर्गों ने साम्प्रदायिकता, जातिवाद, क्षेत्रीयता, भाषावाद, अल्संख्यकवाद, दलितवाद को भुनाना भी शुरू किया जिससे एक वर्ग दूसरे वर्गों के प्रति घृणा कर सके, अपने–अपने अधिकारों को लेकर सड़क पर उतर सके, देश का विभाजन तक करा सके। इस स्थिति से निपटने के लिए देश में सांस्कृतिक पुनर्जागरण का दौर चला जिसका नेतृत्व राजा राममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, रवीन्द्रनाथ

शेष पृष्ठ 6 पर

स्वतंत्रता सेनानी महाशय तेजपाल सिंह जी की पुण्यतिथि के अवसर पर

दिनांक 20 अगस्त, 2022 को यदु स्कूल, सर्फाबाद, नोएडा में विशाल समारोह का आयोजन

प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी महाशय तेजपाल सिंह जी की 5वीं पुण्यतिथि के अवसर पर 20 अगस्त, 2022 को विशेष यज्ञ एवं समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के सूत्रधार उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध जननेता श्री डी.पी. यादव सपत्नीक यजमान बने और अपने पूज्य पिता जी की स्मृति में यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान कर संकल्प लिये। यज्ञ के ब्रह्मा पद को स्वामी आर्यवेश जी ने सुशोभ्जित किया और स्वामी प्रणवानन्द जी ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से परिवारजनों को आशीर्वाद दिया। यज्ञ में पौरोहित्य का दायित्व युवा विद्वान् आचार्य संजीव रूप ने संभाला तथा आचार्य अर्जुनदेव आदि ने वेद पाठ किया। यज्ञ एवं समारोह का संयोजन महायश तेजपाल सिंह जी के सुयोग्य सुपौत्र राजेन्द्र यादव ने संभाला हुआ था। उनके संयोजन में कार्यक्रम अत्यन्त सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। यज्ञ के उपरान्त समारोह का कार्यक्रम मुख्य मंच से संचालित हुआ। जिसमें देश के सैंकड़ों राजीतिक नेता, धार्मिक नेता, सामाजिक कार्यकर्ता तथा हजारों की संख्या में क्षेत्र के कार्यकर्ता सम्मिलित रहे।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि महाशय तेजपाल शिक्षा, विशेषकर कन्या शिक्षा के प्रबल पक्षधर थे। वे जानते थे कि अंग्रेजों की वर्षों की गुलामी से आजाद होने के बाद असली स्वतंत्रता तभी प्राप्त होगी जब हम भारत के लोगों में अपनी भाषा, अपनी शिक्षा पद्धति और अपने संस्कारों के लिए निष्ठा पैदा कर पायेंगे। इसी सोच के साथ उन्होंने सबसे पहले इस क्षेत्र में कन्याओं के लिए शिक्षण संस्थान शुरू करने की प्रेरणा दी। महाशय तेजपाल सिंह गरीबों के हितैषी थे उन्होंने अपने पुत्रों को यह शिक्षा दी थी कि यदि कभी गरीबों के ऊपर जुल्म तथा अत्याचार होते हों तो तुम्हें पीछे नहीं हटना बल्कि अत्याचारियों से लड़ना है। उन्हीं की शिक्षा से श्री डी.पी. यादव ने अपने जीवन में गरीबों की लड़ाईयाँ लड़ी हैं।

वैदिक विरक्त मंडल के प्रधान तथा गुरुकुल गौतम नगर के संचालक स्वामी प्रणवानंद जी ने कहा कि महाशय जी ने समाज में व्याप्त छुआछूत और अंधविश्वास जैसी कुरीतियों को लेकर भी व्यापक जन–जागरण अभियान चलाया और समाज को विज्ञान–सम्मत वैदिक चिन्तन से जोड़ा। यह उनकी सोच, दूरदृष्टि और संघर्षों का ही परिणाम है कि आज हमारे क्षेत्र की लड़कियां पढ़ाई से लेकर खेल–कूद में देश में अपना नाम रोशन कर रही हैं और क्षेत्र का गौरव बढ़ा रही हैं। मुझे खुशी है कि महाशय तेजपाल जी के सपने को साकार करने की दिशा में

सार्थक प्रगति हो रही है।

पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ० महेश शर्मा जी ने अपने संबोधन में महाशय तेजपाल जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए बताया कि आज से 39 वर्ष पूर्व जब मैं नोएडा में आया तो मुझे इसी परिवार से सबसे अधिक संबल प्राप्त हुआ तथा आज तक श्री डी० पी० यादव ने एक पारिवारिक सदस्य की तरह हमेशा मेरा सहयोग किया।

प्रसपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिवपाल सिंह यादव ने कहा कि महाशय तेजपाल सिंह जी का जीवन आने वाली पीढ़ियों को सदैव सेवा और सदाचार की प्रेरणा देता रहेगा।

महाशय तेजपाल जी के जीवन और संघर्ष पर प्रकाश डालते हुए पूर्व कैबिनेट मंत्री एवं सांसद रह चुके उनके सुपुत्र श्री डी.पी. यादव ने बताया कि किस तरह महाशय तेजपाल जी ने 1942 में महात्मा गाँधी जी द्वारा शुरू किए गए 'अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन' के समय न सिर्फ क्षेत्र के लोगों को आंदोलन में भाग लेने हेतु प्रेरित किया बल्कि अन्य जरूरी मदद प्रदान कर आंदोलन को मजबूत और सफल बनाने का कार्य किया। जिससे नाराज होकर जालिम अंग्रेज हुकूमत ने उन्हें बुलंदशहर जेल में कैद कर लिया और नाना प्रकार के लोभ और यातनाएं दी लेकिन उनके साहस, मजबूत इच्छाशक्ति और प्रबल राष्ट्रप्रेम की भावना को रत्ती भर भी कमजोर न कर सके। उन्होंने इस कार्यक्रम में सम्मिलित सभी लोगों का धन्यवाद करते हुए अन्य क्षेत्रों में भी इसी प्रकार स्वतंत्रता सेनानियों के सम्मान और उनके व्यक्तित्व और संघर्षों के व्यापक प्रचार–प्रसार की अपील की ताकि आने वाली नई पीढ़ी हमारे देश की आजादी में नींव की ईंट बनने वाली इन महान विभूतियों से परिचित हो सके और उनके जीवन से प्रेरणा लेकर भारत को एक बार फिर विश्वगुरू के पद पर प्रतिष्ठित करने के संकल्प को साकार कर सकें।

इस कार्यक्रम में उन्नाव के सांसद साक्षी महाराज, पूर्व मंत्री अवधपाल सिंह, पूर्व सांसद महाबल मिश्रा, दिल्ली भाजपा के उपाध्यक्ष सुनील यादव, पूर्व एमएलसी जितेंद्र यादव, राष्ट्रीय लोकदल के राष्ट्रीय महासचिव त्रिलोक त्यागी, जाने–माने अभिनेता श्री रंजीत, आचार्य बिरजानंद दैवकरणी, आचार्य अर्जुनदेव, डॉ. राजेन्द्र यादव, लोक गायक ब्रह्मपाल नागर समेत राजनीति एवं समाज की अन्य कई दिग्गज हस्तियाँ उपस्थित रहीं। मंच का संचालन डॉक्टर देवेश शास्त्री तथा सतेंद्र यादव ने सामूहिक रूप से किया। इस अवसर पर शिक्षण संस्थाओं के बच्चों ने भी कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रामपाल शास्त्री जी की माता श्रीमती दिलभरी जी का आकस्मिक निधन

मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रामपाल शास्त्री जी की पूज्या माता श्रीमती दिलभरी जी धर्मपत्नी स्व. श्री रामपत आर्य, ग्राम–ईस्माइला, रोहतक, हरियाणा का आज दिनांक 1 सितम्बर, 2022 (गुरुवार) को प्रातः 2 बजकर 25 मिनट पर 87 वर्ष की आयु में अचानक निधन हो गया है। उनका अन्तिम संस्कार गाँव के श्मशान भूमि पर प्रातः 10 बजे पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

माता जी परम साध्वी, परिश्रमी, धर्मपारायणा, सेवाभावी सद्गृहणी थीं। माता जी अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़कर गई हैं। माता जी ने अपने सुपुत्र श्री रामपाल शास्त्री जी तथा एक सुपुत्री को गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से पढ़ाया। माता जी के संस्कारों की बदौलत ही आज उनके सुपुत्र श्री रामपाल शास्त्री आर्य समाज के कार्यों को बढ़–चढ़कर कर रहे हैं।

श्री रामपाल शास्त्री मानव सेवा प्रतिष्ठान के संस्थापक तथा आर्य ग्राम विकास समिति रठौड़ा, बागपत के अध्यक्ष हैं इसके अतिरिक्त अन्य

संस्थाओं से जुड़कर समाजसेवा के कार्यों में दिन–रात अपना समय दे रहे हैं। आज वे यह सब जो भी कर पा रहे हैं इसके पीछे उस देवी का ही हाथ है, जिसने ऐसे सुयोग्य सुपुत्र को जन्म देकर वैदिक शिक्षा एवं अच्छे संस्कारों से ओत–प्रोत करके सुयोग्य बनाया। ऐसी धर्मपारायणा माता जी का अचानक निधन निश्चित रूप से परिवार एवं समाज की अपूर्णीय क्षति है। माता जी के निधन से मुझे व्यक्तिगत रूप से अत्यन्त कष्ट पहुँचा है। परन्तु परमात्मा की व्यवस्था को हम सभी को न चाहते हुए भी स्वीकार करना पड़ता है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें और शोक संतप्त परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति दें। माता जी की स्मृति में दिनांक 11 सितम्बर, 2022 (रविवार) को 1115/31, प्रीत विहार, रोहतक, हरियाणा (नियर पूरन आटा चक्की) में श्रद्धांजलि सभा का कार्यक्रम रखा गया है।

योगाचार्य आचार्य कौशल कुमार जी के पूज्य पिता श्री प्रेम नारायण शुक्ल जी का असमय निधन

सच्चे कर्त्तव्यनिष्ठ कर्मयोगी श्री प्रेम नारायण शुक्ल जी का दिनांक 19 अगस्त, 2022 को उपचाराधीन के दौरान असमय निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से दिनांक 20 अगस्त, 2022 को दिल्ली के लोधी श्मशान घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में दिनांक 31 अगस्त, 2022 को वाटिका अपार्टमेंट, मायापुरी, नई दिल्ली के योगा हाल में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें सैकड़ों लोग पहुँचकर अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री प्रेम नारायण शुक्ल जी सुन्दर व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने पूरा जीवन सत्य को धारण करते हुए योग एवं अध्यात्ममय जीवन जिया। वे परोपकार एवं समाजसेवा के कार्यों में सदैव लगे रहे। वे सदैव सत्य को स्वीकार करते थे तथा कर्म में विश्वास करते थे। वे असत्य का परित्याग करते हुए अपने दिमाग को स्वतंत्र रखते थे, वे आन्तरिक जीवन में कम से कम चीजों का संकलन रखते थे। ऐसे धर्मात्मा पिता के चार सुयोग्य पुत्रों में से सबसे बड़े सुपुत्र आचार्य कौशल कुमार जी योग एवं अध्यात्म के क्षेत्र के साथ–साथ पत्रकारिता एवं लेखन कार्य में भी अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

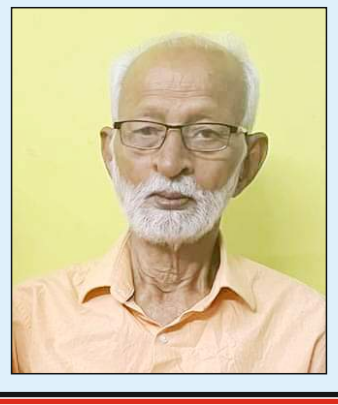

आचार्य कौशल कुमार जी योग पर अनेकों पुस्तक लिख चुके हैं। महर्षि पतंजलि के विचारों को जन–जन तक पहुँचाने का संकल्प लेकर कार्य कर रहे हैं। योग एवं अध्यात्म के पथ पर अग्रसर होने के लिए कौशल कुमार को अपने पूज्य पिता जी से प्रेरणा मिली। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में पिता का अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। पिता सिर की छाया होता है। आचार्य कौशल कुमार के अतिरिक्त अन्य सभी भाई भी योग के क्षेत्र में अपना–अपना योगदान दे रहे हैं। परिवार के मुखिया का अचानक चले जाना बहुत ही कष्टकारी होता है। परन्तु परमात्मा के निर्णय को न चाहते हुए भी सहन ही करना पड़ता है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से स्वामी आर्यवेश जी ने श्री प्रेम नारायण शुक्ल जी को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की, कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा परिजनों को इस असहनीय कष्ट को सहन करने की शक्ति दें। आचार्य कौशल कुमार जी सार्वदेशिक सभा के कार्यकर्ता घनश्याम मुरारी के परम आत्मीय मित्र हैं।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एवं गुरुकुल धीरणवास का स्थापना दिवस समारोह सोल्लास सम्पन्न

योगेश्वर श्रीकृष्ण जी के वैदिक स्वरूप को समझना आवश्यक है

– स्वामी आर्यवेश

गुरुकुल धीरणवास के प्रांगण में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तथा गुरुकुल स्थापना दिवस के अवसर पर दिनांक 19 अगस्त, 2022 को विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में श्रीकृष्ण के वास्तविक जीवन पर मुख्य प्रवचन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के नेता स्वामी आर्यवेश जी का हुआ।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने मनुष्य जीवनोपयोगी उपदेश देने के उपरान्त योगेश्वर श्रीकृष्ण के वैदिक स्वरूप पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि योगीराज श्रीकृष्ण का जीवन आप्त पुरुषों के समान था। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कहा है कि – ''देखो श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्योत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है, जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मृत्यु–पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा है, परन्तु इन भागवत वालों ने अनुचित मनमाने दोष लगाये हैं।'' योगेश्वर श्रीकृष्ण इस दुनिया के एक मात्र ऐसे महापुरुष थे जिनके जन्म लेने से पूर्व उनकी मौत के आदेश हो गये थे। आप सभी जानते हैं कि निरंकुश शासक और योगेश्वर श्रीकृष्ण के मामा कंस ने यह घोषित कर दिया था कि उनकी बहन के पेट से जो बच्चा जन्म लेगा वह मेरा शत्रु होगा और मैं उसे जीवित नहीं रहने दूँगा। आप सबको विदित है कि योगेश्वर श्रीकृष्ण का जन्म जेल में हुआ था और येन–केन–प्रकारेण श्रीकृष्ण जी को जेल से बाहर निकाल लेने में उनके पिता वासुदेव ने सफलता प्राप्त कर ली थी। उन्होंने धर्म की पुनर्स्थापना के लिए, वैदिक संस्कृति को बचाने के लिए आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किए। महाभारत युद्ध में भी उन्होंने उपदेश करके पूरी दुनिया के सामने कर्तव्य के प्रति सजग रहने का संदेश

दिया। श्री कृष्ण जी वैदिक सनातन संस्कृति के आधार स्तम्भ थे। लेकिन आज हमें यह बताते हुए कष्ट हो रहा है कि बड़े–बड़े मंचो पर उन्हें चोर, व्यभिचारी, छलिया कहा जाता है। आज सरकार को चाहिए कि श्रीकृष्ण के बारे में अनर्गल बातें करने वालों पर प्रतिबंध लगाए। स्वामी जी ने लोगों से आह्वान किया कि जो लोग हमारे महापुरुषों को बदनाम करने का कार्य कर रहे हैं उनके कार्यक्रमों का बहिष्कार करें। उनके कार्यक्रमों में जाना बंद करें। स्वामी जी ने कहा कि जो लोग अपने पूर्वजों के सम्मान को सुरक्षित रखते हैं वही समाज में अनुकरणीय होते हैं।

उतर प्रदेश से पहुंची भजनोपदेशिका श्रीमती संगीता ने श्रीकृष्ण के जीवन पर भजन प्रस्तुत करते हुए कहा कि यदि लोग श्रीकृष्ण के जीवन का अनुसरण करें तो हमारा देश पुनः विश्वगुरु बन सकता है। कार्यक्रम में गुरुकुल के विद्यार्थियों ने वैदिक संस्कृति के कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस कार्यक्रम में विकास एकेडमी के बच्चे भी शामिल हुए।

कार्यक्रम के पश्चात् बच्चों को पुरस्कार वितरण किया गया तथा स्वामी आर्यवेश जी एवं संगीता आर्या को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। मंच का संचालन गुरुकुल धीरणवास, हिसार के प्रधान स्वामी आदित्यवेश जी ने किया।

इस अवसर पर प्रसिद्ध हरियाणवी गायक श्री विकास सातरोड, गुरुकुल के पूर्व प्रधान युद्धवीर सिंह, नंदराम सांगवान, मंत्री दलबीर, रामस्वरूप, स्वामी मुक्तिवेश, शमशेर नंबरदार, कैप्टन सूबे सिंह, सतपाल अग्रवाल, सत्यप्रकाश आर्य, जगदीश आर्य, इंद्रजीत आर्य, आचार्य देवदत शास्त्री, सुरेंद्र आर्य, संतलाल पचार, सूबे सिंह आर्य, ईश कुमार आर्य, विनय मल्होत्रा, खजान सिंह पनिहार, भूप सिंह, सुरेंद्र आर्य, अनिल आर्य, सोनू आर्य, सहसरपाल आर्य आदि उपस्थित रहे।

आर्य समाज आदर्शनगर, राजापार्क, जयपुर में स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी व्याख्यान

14 अगस्त, 2022 को यज्ञ के उपरान्त आर्य समाज आदर्शनगर, राजापार्क, जयपुर में स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी व्याख्यान हुआ। स्वामी जी ने स्वतंत्रता दिवस की पूर्व दिवस पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए आर्य समाज की स्वतंत्रता आन्दोलन में भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जहां समाज सुधार के क्षेत्र में क्रांतिकारी कार्य किये वहीं उन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए भी अनेक नव–युवकों को प्रेरित किया और उनके हृदय में देशभक्ति की भावना भरी। किन्तु दुर्भाग्य की बात है कि आज जब स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव देश में मनाया जा रहा है तब ऐसे महान क्रांतदर्शी संन्यासी महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा उनके अनुयायियों की घोर की उपेक्षा की जा रही है। उनके योगदान और राष्ट्र निर्माण तथा राष्ट्र की आजादी में उनकी भूमिका को जानबूझकर अनदेखा किया जा रहा है। यह बात किसी से छिपी नहीं है कि कुछ महीने पहले आधुनिक दार्शनिकों की सूची से यू. जी.सी. ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का नाम हटाकर एक अक्षम्य अपराध किया था। हमने उस विषय को जोर–शोर से उठाया, अखबारों में बयान भी दिये। यू. जी.सी. तथा केन्द्र के शिक्षामंत्री को पत्र भी लिखे किन्तु स्वामी जी का नाम वापिस सूची में सम्मिलित नहीं किया गया। यह एक सोची–समझी चाल या षड्यन्त्र ही है। जिसके कारण महर्षि दयानन्द सरस्वती की उपेक्षा हो रही है। आर्यों को इस सम्बन्ध में गम्भीरता से

विचार करना चाहिए और ऋषि दयानन्द की प्रतिष्ठा को जन–जन तक पहुँचाने के लिए कार्य करना चाहिए। जब तक हम ऐसे लोगों के प्रति अपने मन में सहानुभूति बनाकर रखेंगे जो ऋषि दयानन्द और आर्य समाज को किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं करते तब तक हम अपने उत्तरदायित्व को पूरा नहीं कर पायेंगे। अतः समूचे आर्य जगत को ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के लिए एकमत होकर देश–विदेश में अभियान चलाना चाहिए। जो भी ऋषि दयानन्द की उपेक्षा करेगा हम उसे किसी भी कीमत पर सहन नहीं करेंगे।

स्वामी आर्यवेश जी के ओजस्वी व्याख्यान से उपस्थित आर्यजनों में विशेष उत्साह का संचार हुआ और सभी ने आश्वस्थ किया कि वे इस दिशा में अवश्य ही जागरूकता पैदा करेंगे और प्रधानमंत्री तथा राष्ट्रपति को पत्र लिखकर अपनी भावनाओं से अवगत करायेंगे। इस कार्यक्रम का संयोजन आर्य समाज के उपमंत्री श्री अनिरूद्ध साहनी ने किया। यज्ञ का सम्पादन पं. जानकी प्रसाद शास्त्री ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन आर्य समाज की प्रधाना बहन मृदुला सामवेदी जी ने बड़े भावपूर्ण शब्दों में किया। कार्यक्रम में सर्वश्री बलदेव राज आर्य मंत्री, श्री नाथूलाल शर्मा, श्री रामस्वरूप मीणा, श्री रामकुमार गौड़, श्री विकास आर्य, श्री रवि नैय्यर, आर्य समाज महिला सभा की प्रधाना श्रीमती शशि दीवान, श्रीमती ऊषा चांदना, वैदिक बालिका स्कूल की अध्यापिकाएँ आदि मुख्य रूप से उपस्थित थे।

पृष्ठ 3 का शेष

प्रथम स्वाधीनता आन्दोलन में आर्य समाज की भूमिका

टैगोर, योगी अरविन्द घोष, महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी रामतीर्थ, स्वामी विवेकानन्द, महादेव गोविन्द रानाडे, ज्योतिबा फुले आदि युग–पुरुषों ने किया। इस सांस्कृतिक धरोहर का सदुपयोग आगे चल कर बालगंगाधर तिलक, लाला लाजपतराय, गोपाल कृष्ण गोखले स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा गांधी आदि ने अपनी राजनीतिक गतिविधियों में उठाया। स्वामी श्रद्धानन्द जी का दिल्ली की जामा मस्जिद और फतेहपुरी मस्जिद में जाकर मुसलमानों को सम्बोधित करना इसी युग का सुफल था। बाद में उनकी निर्मम हत्या एक मतांध मुस्लिम के हाथों हुई जो इस बात की सूचक थी कि साम्प्रदायिक सौहार्द को भंग करने वाली ताकतें भी इस देश में विद्यमान हैं फलतः पाकिस्तान के संस्थापक मुहम्मद अली जिन्ना और राष्ट्रीय गीतों के अमर रचनाकार अल्लामा इकबाल जो कभी राष्ट्रवादी थे वे बाद में राष्ट्र के विभाजन के पैरोकार बन बैठे और मास्टर तारा सिंह जैसे लोगों ने सिख होमलैण्ड की मांग इसी दौरान बड़ी गम्भीरता और तत्परता से उठाई। उसी तरह की चिंगारी दक्षिण में भी सुलग रही थी जो बाद में रामा स्वामी नायकर के रूप में भड़की। ऐसी मुस्लिम रियासतों ने जहाँ मुस्लिम अल्पसंख्यक और हिन्दु बहुसंख्यक था पाकिस्तान में विलय करने के संकेत देने शुरू कर दिये। परदे के पीछे शह मात का जो खेल चल रहा था उसे उपनिवेशवादी ताकतों ने खूब हवा दी जिससे कि दूसरे दौर का स्वाधीनता आन्दोलन दम तोड़ सके। इन सभी घटनाओं का लेखा–जोखा ईमानदारी से यदि देश की जनता के सामने रखा जाता या विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम का उसे हिस्सा बनाया जाता तो जो उपनिवेशवादी अवधारणाएँ देश में आज़ादी के बाद बची रहीं उनका खात्मा हो चुका होता। आज तो ये अवधारणाएँ दुर्भाग्य से दलगत राजनीति का और सरकार की तुष्टीकरण नीति का अभिन्न अंग बन चुकी हैं। देश के काले अंग्रेजों ने गोरे अंग्रेजों की राह पकड़ कर उपनिवेशवादी नीतियों को चिरस्थायी बना दिया है और आज़ादी के उस मकसद को, जिसके लिए दो दौर के स्वाधीनता संघर्ष में लाखों लोगों ने बलिदान दिया, भुला दिया गया है। आज़ादी चन्द लोगों तक ही सीमित होकर रह गई है जिसका पूरा लुत्फ पूंजीवादी या राजनीतिक लोग उठा रहे हैं। देश का अन्नदाता किसान आज आत्महत्याएँ करने पर मजबूर है। देश की युवा शक्ति भटक कर राहजनी, डकैती, अपहरण, फिरौती, हत्याओं का धंधा करने लगी है। साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, पाखण्ड, शोषण, नारी उत्पीड़न, भाषावाद, क्षेत्रीयता, लिंग भेद, नस्लभेद आजादी के कई दशकों में बजाय खत्म होने के और अधिक पनपे हैं। यहाँ तक कि हमारे परम्परागत जीवन मूल्य जिन पर हम गर्व करते थे वे भी हमारे जीवन से, परिवार से, समाज से खत्म होते जा रहे हैं। निश्चय ही देश ने भौतिक उन्नति की है, विज्ञान, तकनीक, उद्योग के क्षेत्र में आशातीत प्रगति की है लेकिन हमारे जीवन से नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का निरंतर ह्रास भी होता रहा जो सुखद भविष्य के प्रति हमें चिंता में डालता है। जाहिर है कि आज़ादी के संघर्ष के दौरान समाज में जो मूल्य प्रतिष्ठित हुए थे वे आज़ादी मिलते ही तेजी से विलुप्त होने लगे और जिन उपनिवेशवादी तन्त्रों के विरुद्ध यह संघर्ष हुआ था वह समूचा तन्त्र यथावत बना रहा।

आज जरूरत इस बात की है कि जंगे आज़ादी का

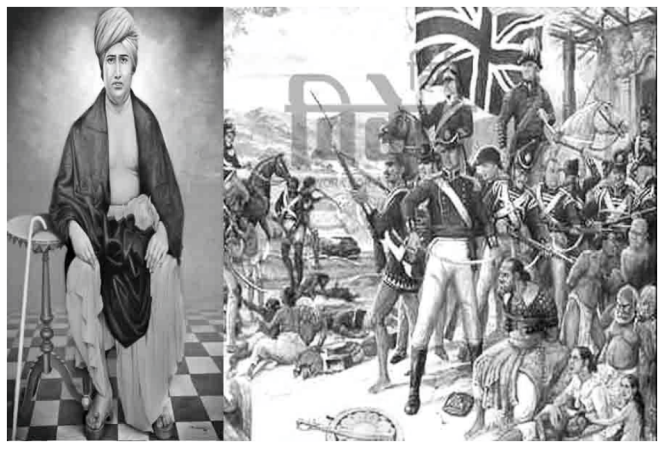

इतिहास निरपेक्ष होकर, निष्पक्ष होकर लिखा जाये। जिन मूल्यों की रक्षा के लिए यह जंग शुरू हुई उन मुद्दों को फिर से सामने लाया जाये। आज़ादी के मकसद की पुनः व्याख्या हो और गत ७५ वर्षों में हमने क्या खोया क्या पाया इसकी हो विशद विवेचना। जंगे आज़ादी और आज के दौर में क्या अन्तर हम देख रहे हैं यह बात भी खुल कर सामने आनी चाहिए। हमें उन कारणों को ढूँढ़ना होगा जो आज़ादी मिलने पर भी करोड़ों लोगों को मूलभूत अधिकारों अर्थात् रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा और न्याय से वंचित रखे हुए हैं। देश में अपराध बढ़ें, आतंकवाद पनपे, साम्प्रदायिक उपद्रव हों, जातीय विद्वेष की आग भड़कती रहे क्षेत्रीयता की भावना भड़के, बड़ी मछली छोटी मछली को खाती रहे– यह समूचा परिदृश्य गुलामी का है अथवा आज़ादी का इस पर गम्भीरता से मंथन होना चाहिए। राजनीतिक आजादी पाने का अर्थ समूची आज़ादी की गारंटी नहीं है यदि देश की अधिसंख्यक जनता आर्थिक दासता की शिकार है, सामाजिक विभाजन व शोषण, नशाखोरी, धार्मिक पाखण्ड, अंधविश्वासों, गुरुडम और शैक्षिक विषमता की गुलाम है, जातीय पूर्वाग्रहों की शिकार है। जिस सांस्कृतिक पुनर्जागरण की नींव पर राजनीतिक स्वाधीनता की लड़ाई लड़ी गई आजादी मिलते ही पुनर्जागरण के उन मूल्यों की एकाएक अनदेखी क्यों हो गई इस पर भी मंथन होना चाहिए क्योंकि इन मूल्यों का महत्व राजनीतिक स्वाधीनता से भी बढ़ कर है। इस दिशा में यदि स्वस्थ चिन्तन होगा तो सम्पूर्ण स्वाधीनता के तीसरे दौर की सम्भावनाएँ अवश्य बलवती हो सकेंगी। आज का युगधर्म और राष्ट्रधर्म हमें इस पथ पर बढ़ने की सतत प्रेरणा दे रहा है लेकिन यह प्रेरणा दलगत राजनीति के अरण्य रोदन में कहीं दबती जा रही है अतः आजादी का निष्पक्ष इतिहास सरकारी संसाधनों का मोहताज होकर नहीं लिखा जा सकता और न ही किसी वाद के पूर्वाग्रहों का आश्रय लेकर लिखा जा सकता है यह तय है।

आज़ादी का यह इतिहास तो किसी निर्धन की कुटिया में बैठ कर तेल के दीये या कैरोसीन की लालटेन या मोमबती की लौ में बैठ कर ही लिखा जा सकेगा। जिस संवेदना और करुणा को लेकर महर्षि वाल्मीकि ने रामायण की रचना की थी वही संवेदना और करुणा आज़ादी के इतिहास की कलम व स्याही बन सकती है अन्यथा इतिहास के नाम पर जो भी लिखा जायेगा वह सिवाय एक धोखे और मज़ाक के अन्य कुछ भी नहीं होगा। स्वाधीनता महज एक औपचारिकता, एक उत्सव, एक समारोह बन कर न रह जाये बल्कि तीसरे दौर की आज़ादी का शंखनाद बने, सांस्कृतिक पुनर्जागरण का समाघोष बने तभी इसका कुछ ऐसा अर्थ निकल सकता है जो शोषित, पीड़ित, विभाजित जनता का कायाकल्प कर सके। अतः आज़ादी का इतिहास लिखने वाले किसी भी इतिहासकार के लिए ऐसा इतिहास लिखना मनोविलास नहीं एक युगधर्म व राष्ट्रधर्म होगा। इसी नियति का कायल होकर उसे इतिहास लेखन का अपना कार्य सम्पादित करना होगा। ऐसा गरिमापूर्ण इतिहास ही राष्ट्रीय अस्मिता को दीमक बन कर चाट रहे सम्प्रदायवाद, जातिवाद, भ्रष्टाचार, नशोखारी, पाखण्ड, अपराध वृत्ति, आतंकवाद, लिंग भेद नस्ल भेद आदि महारोगों को नष्ट करने में सक्षम होगा।

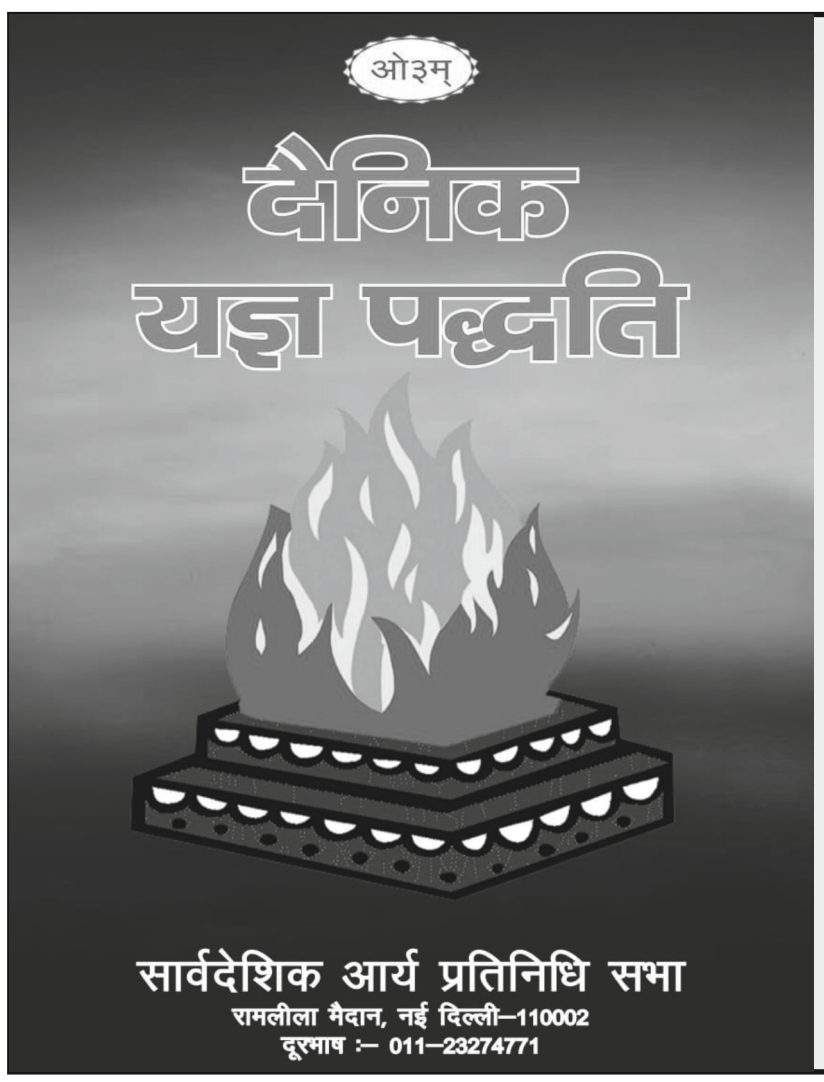

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
द्वारा प्रकाशित
'दैनिक यज्ञ पद्धति'

आर्यजनों की भारी माँग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों तथा विशिष्ट बृहद्यज्ञों की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मन्त्र, विशेष प्रार्थनाएँ तथा भजन संग्रह का भी समावेश इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। यज्ञ की यह पुस्तक अत्यन्त आकर्षक तथा सुन्दर टाईटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छपकर तैयार है। 50 पृष्ठों तथा 23X36 के 16वें साईज की इस पुस्तक का मूल्य 18/ रुपये रखा गया है। लेकिन 100 पुस्तक लेने पर मात्र 1000/– रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 011–42415359
मो.:–8218863689

अंधविश्वास का बढ़ता बोलबाला

– अशोक आर्य

कई बार हम सोचते हैं कि जड़–पूजा का जो स्वरूप व अंधविश्वास जनित जो घटनाएँ कथाएँ हम देखते–सुनते हैं वे हमारे भारत में ही हैं क्योंकि यहाँ गरीबी और अशिक्षा ज्यादा है तथा पौराणिक परम्परा में इसके आधार भी हमें प्राप्त हैं, पर यह बात सत्य नही है। विश्वभर में विस्तृत अन्य मतों में भी 'चमत्कार को नमस्कार' की प्रवृत्ति देखने को मिलती है।

ऐसी मान्यताओं की पृष्ठभूमि में वस्तुतः प्रमुख रूप से तीन तत्व कार्य करते हैं।

प्रथम – मानव मन सामान्य तौर पर प्रत्यक्ष पर विश्वास करता है, साकार प्रतिमा में उसे अपनी श्रद्धा व्यक्त करने हेतु प्रत्यक्ष आधार मिल जाता है। इसके साथ देखा–देखी, अधिकांश द्वारा अनुकरण व दृढ़ परम्परा का निर्मित हो जाना, उसे तात्विक चिंतन तथा विश्लेषण से दूर ले जाता है। एक मनुष्य के रूप में ही ईश्वर की कल्पना व उसके साथ तथावत् व्यवहार उसे सहज लगता है तथा ऐसी ही मानसिकता वाले करोड़ों की संख्या के मध्य सृष्टि क्रम से विरुद्ध घटनाओं को भी वह तर्क से परे मानता है।

कवि बड़े विकट और तर्काधारित सटीक प्रश्न करता है –

अजब हैरान हूँ भगवन तुम्हें कैसे रिझाऊँ मैं।
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लाऊँ मैं।।

भोग लगाने पर तंज करते हुए कवि लिखता है कि जो सारे संसार को खिलाता है उसे कैसे और क्या खिलाया जा सकता है, जो सारे संसार को प्रकाशित करता है उसे दीपक दिखाने का कार्य बाल–बुद्धि ही कहा जावेगा। पर ये प्रश्न हमारी विचारतन्त्री को संभवतः झकझोरते नहीं हैं, अतः जड़–पूजा स्थलों पर एक जैसे दृश्य दिखायी पड़ते हैं यथा भगवान् को भोग लगाना, नहलाना, कपड़े पहनाना, शयन कराना, पंखे झलना, कूलर लगाना यहाँ तक कि यह मानकर कि एक ही स्थान पर बैठे–बैठे ठाकुर जी बोर हो गए होंगे, उन्हें कभी–कभी बाहर भ्रमण भी कराना आदि–आदि। इसकी विस्तार से चर्चा इस आलेख का उद्देश्य नहीं है। बात हम यह कहना चाहते हैं कि जड़–पूजा से जुड़ी यह स्थिति भारत में ही नहीं बाहर भी है। लगभग एक वर्ष पूर्व हम बैंकाक गए थे, वहाँ पटाया में एक प्रसिद्ध बौध मंदिर है, वहाँ का दृश्य भारत से बिलकुल भी अलग नहीं था। मूर्तियों पर और तो और मिनिरल वाटर तथा कोल्ड ड्रिंक का भोग लगा हुआ था। एक बौद्ध भिक्षु हाथ में एक बाँस की झाड़ू सी लेकर लोगों के सिरों पर रख–रख कर उनकी समस्याओं को दूर कर रहा था। ठीक यहाँ जैसा माहौल। भीड़ की रेलमपेल। अस्तु।

दूसरी बात जो ऐसे स्थलों से जुड़ी हुई है वह है हर स्थल के महत्त्व व महात्म्य की अपनी गाथा। आज तक हमने ऐसा एक भी इस श्रेणी का स्थल नहीं देखा जहाँ के महत्त्व की अतिवादी चर्चा न की गयी हो तथा आगन्तुकों को प्रत्यक्ष व तुरंत लाभ की गारंटी न दी जाती हो। यही वह लोभ है जो शंकालुओं को भी, शिक्षितों को भी, तार्किकों को भी लाइन में लगवा देता है।

इसी में तीसरी बात का तड़का लगाकर उपस्थिति–वृद्धि को सुनिश्चित कर दिया जाता है, वह है चमत्कार। जो भी प्रबंधन इन तीनों फैक्टर्स की जितनी अच्छी मार्केटिंग कर लेगा उतनी ही भीड़ उसके द्वारा नियंत्रित स्थलों पर आयेगी।

यह श्रद्धा मन की मुराद पूरी करने की आशा का प्रत्यक्ष परिणाम है। यह दावा केवल हिन्दू धर्मस्थलों के सम्बन्ध में है ऐसा समझना भारी भूल होगी। मुस्लिम तथा ईसाई धर्मस्थल भी चमत्कार तथा मनौती पूरी करने के दावे से उत्सर्जित आक्सीजन पर श्वांस ले रहे हैं।

क्योंकि 'मेरे सारे दुःख तुरंत दूर हो जायँ', यह ऐसी कामना है जिससे कौन बचा है? हाँ, जो कार्य–कारण सिद्धांत को अटल मानता है, परमेश्वर की कर्मफल व्यवस्था में जिनका अटल विश्वास है, जो सृष्टिक्रम से विरुद्ध को असंभव मानते हैं उनकी बात भिन्न है, अन्यथा तो विपत्ति के समय, जहाँ से भी जैसे भी राहत मिले वैसा करने को अच्छे से अच्छे शिक्षित और तर्कशील लोग तैयार होते देखे जाते हैं। यह चमत्कार मेरे साथ हुआ है अथवा ऐसा मैंने साक्षात् देखा है, कहने वाले उत्प्रेरक तत्व के रूप में काम करते हैं। ऐसे तथाकथित चमत्कारों की अनेकानेक कारणों से कभी पूर्ण वैज्ञानिक तथा निर्दोष पद्धति से परीक्षा न होने से भ्रम–भंजन हो नहीं पाता, यही कारण है कि हिन्दू महिलाएँ हिन्दू धर्मस्थलों पर ही नही मुस्लिम धर्मस्थलों की शरण में बहुतायत से जाती देखी जाती हैं।

ऐसे स्थलों के अस्तित्व में आने के सम्बन्ध में भी ऐसी चमत्कारिक पृष्ठभूमि बतायी जाती है कि वे श्रद्धालुओं को अधिकाधिक आकर्षित कर सकें। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के 11 वें समुल्लास में कुछ स्थलों से जुड़ी कहानियों की समीक्षा की है। यह यथार्थ समीक्षा वे इस कारण कर पाए क्योंकि उन्होंने उन स्थलों की वास्तविकता तथा चमत्कार की असलियत को अपनी आँखों से देखा था। उन्होंने ज्योतिर्लिंग, जगन्नाथ के मंदिर, ज्वालादेवी आदि के चमत्कारों का विश्लेषण सत्यार्थप्रकाश में किया है। विशेष जानकारी के लिए पाठकों को ये स्थल अवश्य पढ़ने चाहिए।

ठीक यही स्थिति हमें मुस्लिम तथा ईसाई धर्मस्थलों के सन्दर्भ में दिखाई दी। उसकी थोड़ी चर्चा यहाँ करेंगे। अजमेर की एक दरगाह के बारे में तो सभी जानते हैं। ख्वाजा साहब की दरगाह। वहाँ उर्स के अतिरिक्त भी मन्नतें माँगने वालों का तांता लगा रहता है।

एक दरगाह तारागढ़ के किले पर है। हमें पृथ्वीराज चौहान का किला देखना था। जब वहाँ पहुँचे तो एक शिष्ट नौजवान ने हमारी जिज्ञासा के उत्तर में कहा कि आपको दरगाह में होकर जाना पड़ेगा, लगे हाथ दरगाह के दर्शन भी कर लीजिये। रास्ते में वह जगह का महात्म्य तथा वहाँ के चमत्कार बताने लगा। उसके अनुसार मीराबाई की माताजी मनौती मानने वहाँ आयीं थीं और मन्नत पूरी होने पर पुनः चादर चढ़ाने आयी थीं। उसके अनुसार जिसने भी यहाँ आकर मन्नत मानी वह अवश्य पूरी हुई। वहाँ मुख्यस्थल पर बहुत सारे धागे ठीक उसी प्रकार बंधे थे जैसे हिन्दू धर्मस्थलों, पेड़ों पर बंधे रहते हैं। उसके अनुसार मन्नत माँगने वाले इन्हें बाँध कर जाते थे तथा अभिलाषा पूरी होने पर उन्हें खोलने भी आते हैं। उस नवयुवक ने यह भी बताया कि विशिष्ट दिनों में समाधि स्थल जोर–जोर से हिलता है। वहाँ घुड़सवारों की कई समाधियाँ हैं पर चमत्कार यह है कि उनकी संख्या घटती बढ़ती रहती है। बकौल उसके आप कभी भी गिन लें कभी गिनती एकसी नहीं होगी। इतना सब सुनते–सुनते एक दरवाजे के पास ले जाकर उसने बताया कि यह पृथ्वीराज के किले का बचा एकमात्र दरवाजा है जिसे सरकार ने संरक्षित घोषित किया हुआ है। देखने तो गए थे किला और देख सुनली दरगाह की कहानी। लाभ यह हुआ कि यह धारणा और पुष्ट हुई कि मत–मतान्तरों में भीड़ जुटाने तथा मान्यता वृद्धि के लिए एक ही जैसे उपाय प्राप्य हैं। तारागढ़ की दरगाह में हजरत मीरां सैयद हुसैन असगर खान्स्वार की समाधि है। जिज्ञासा हुई कि इन सूफी संत की क्या कहानी थी? उस युवक ने इन सूफी साहब की उदारता तथा सहिष्णुता की भूरि–भूरि प्रशंसा की। हमने इतिहास के कुछ पन्नों में झाँकने का प्रयास किया। आश्चर्य हुआ कि वो कोई दरवेश नहीं थे वह तो सैनिक था। वह शहाबुद्दीन गौरी का सेनानी था। जब शहाबुद्दीन ने अजयमेरु (अजमेर) पर अधिकार कर लिया तो इन मीरां सैयद हुसैन असगर खान्स्वार को वहाँ का गवर्नर नियुक्त कर दिया था। जब एक दिन मीरां सैयद हुसैन असगर खान्स्वार के अधिकांश सैनिक राजस्व वसूली करने बाहर गए थे तो मीरां सैयद हुसैन असगर खान्स्वार के साथ–साथ किले के अन्दर रह गए चन्द सिपाहियों का कत्ल राजपूतों ने कर अपनी हार का बदला लिया। एक सेनानी ने दरवेश की उपाधि कैसे प्राप्त की? जो जिन्दगी भर युद्ध करता रहा वह चमत्कार करने वाला संत कैसे बन गया? इस बारे में एक लम्बी कहानी गढ़ी गयी है। अजमेर के राजा से क्रुद्ध हो बदला लेने को तत्पर एक फकीर की सहायतार्थ गौरी के आदेश पर मीरां सैयद हुसैन असगर खान्स्वार निकाह के दौरान बीच में उठकर हिन्दुस्तान आ गए और अजमेर को फतह किया। इसी में अनेक चमत्कार जोड़ दिए गए। जैसे कि नमाज पढ़ रहे मीरां सैयद हुसैन असगर खान्स्वार पर जब एक वजनी पत्थर फैंका गया तो अंगुली के इशारे से उसे मीरां सैयद हुसैन असगर खान्स्वार ने बीच में ही रोक दिया जो आज भी उसी स्थिति में है, जिसे अधरशिला कहा जाता है।

तो चमत्कारों एवं सृष्टि विरुद्ध नियमों के कथन के बिना इन मजहबों की स्थिति नहीं है। सबसे बड़ी बात है कि कुरआन में इस बात को सिद्धांततः स्वीकार कर लिया गया है कि खुदा न सिर्फ मौजिजे और खुली निशानियाँ पैगम्बरों को देता है बल्कि आवश्यकता पड़ने पर अपनी तरफ से अपनी सत्ता को सिद्ध करने हेतु चमत्कार दिखाता रहता है। यही स्थिति बायबिल की है। ज्ञान–विज्ञान विरुद्ध सैकड़ों बातें इनमें भरी पड़ीं हैं। ईसा मसीह को भी ऐसी चमत्कारिक शक्तियों का स्वामी बताया गया है , वह स्पर्श मात्र से असाध्य रोगियों को ठीक कर देते थे, अब यह शक्ति चर्च के पादरियों में भी आ गयी है। वे तो स्पर्श के बिना भी दूरस्थ रोगियों को ठीक कर देते हैं। हमने ऐसी प्रार्थना सभा स्वयं देखी है जिसमें अंधों की आँख ठीक कर दी गयीं ऐसे अंधे को मंच पर बुला कर उसकी साक्षी भी दिलवायी गयी। पर उस प्रार्थना सभा में लगातार सात दिन तक आने के बाद भी एक ऐसी विकलांग बालिका जिसे हम पूर्व से जानते थे यथास्थिति में बनी रही, उसकी स्थिति में रत्ती भर भी सुधार नहीं हुआ। पाठक असलियत क्या है समझ सकते हैं।

ऐसे सभी स्थानों पर भारी भीड़ रहती है जो स्वयं आगे के लिए मार्केटिंग का कार्य करती है। 'नकटे को ईश्वर दर्शन' की कथा की तरह प्रायः ऐसे भक्तगण अपनी मुराद पूरी होने की पुष्टि भी कर देते हैं। यहाँ कोई तर्क नहीं चलता, विज्ञान का यहाँ कोई दखल नहीं है। बस जरा पता चलना चाहिए कि कहीं खडाऊँ स्वयं चलने लग गयी हैं, कहीं हनुमान जी की प्रतिमा रोने लग गयी है, कहीं मरियम की प्रतिमा रोने लग गई है, अंधविश्वास को आस्था का नाम देकर स्वयं को सही होने का आश्वासन देने वाले लोग भारी संख्या में पहुँच जाते हैं और देखते ही देखते एक नए तीर्थ का सृजन हो जाता है।

सभी मतों में गुरुओं बाबाओं की भी यही स्थिति है। दरगाहें मुराद पूरी करती हैं तो पादरी महोदय चंगाई। एक भी ऐसा बाबा नहीं जो इन अलौकिक शक्तियों से लैस न हो। और अगर कोई है तो फिर वह धन सम्पन नहीं हो सकता।

हम न किसी की आलोचना करना चाहते हैं न किसी का दिल दुखाना। पर चिंतन मनन हेतु तर्काधारित सत्य पर विचार करने हेतु प्रेरित करना हमारा कर्तव्य है। अभी कुछ दिनों पूर्व अत्यन्त प्रसिद्ध एक गुरु के बारे में बी.बी.सी. द्वारा निर्मित एक डोक्यूमैंट्री देखने में आयी। उसमें प्रमाण सहित बाबा के चमत्कारों की तो पोल खुली ही है साथ ही उनके जीवन के अनखुले पन्ने भी सामने आये हैं जिनका अन्वेषण तत्समय में प्रभावशाली लोगों के दबाब में नहीं हो पाया। एक धारावाहिक ऐसे संत पर बनाया गया जिसमें प्रत्येक एपिसोड चमत्कारों से युक्त था।

ऐसे सभी धर्मस्थलों, गुरुओं, मजहबों से जिस दिन गढ़े गए चमत्कारों की कहानियों को, उस स्थल पर आने से या दर्शन लाभ करने से होने बाले लाभों के वर्णनों को हटा दिया जावेगा तब किस स्थल पर कितनी भीड़ होगी यह देखने वाली बात होगी।

स्थिति यह है कि विश्वभर से आये दिन ऐसे चमत्कारों की घटनाएँ सामने आती रहती हैं। यहाँ कुछ बानगी प्रस्तुत है –

२००७ की बात है। २० जनवरी शनिवार का दिन था। राजकोट (गुजरात) के एक स्थानीय हनुमान मंदिर में हनुमान जी की आँख से आँसू बहने लगे। वायु–वेग से इस चमत्कार की खबर फैल गयी। रात होते–होते भारी भीड़ इकट्ठी हो गयी। जैसे तैसे पुलिस प्रशासन को बुलाया गया। प्रशासन ने भीड़ को काबू में किया। आलम ये था कि लोगों ने अपनी झोलियाँ खोल दीं। दान देने लगे।

बनारस में भी एक सज्जन श्री नन्दलाल शर्मा के घर में स्थित हनुमान मंदिर में भी मूर्ति के आँसू बहने लगे। भक्तों की भीड़ का क्या कहना? नंदलाल का कहना था कि जब उसके बेटे ने उसे आँसू वाली बात बतायी तब उसे विश्वास नहीं हुआ पर जब उसने देखा तो यह सच था। उसने मूर्ति के चेहरे को पानी से धोया फिर भी हनुमान जी के आँसू बह रहे थे।

उधर भगवान् कृष्ण की लीला स्थली भी क्यों पीछे रहे। वहाँ एक छोटे गाँव में भी हनुमान जी रोने लगे। हमें आशा है कि पाठकगण को गणेश जी का दूध पीना याद होगा ही।

जड़ वस्तु में भावनाएँ उत्पन्न होना फलस्वरूप पत्थर अथवा लकड़ी की बनी प्रतिमा का रोना सृष्टिक्रम से विरुद्ध तथा असंभव है, पर यही तो वे साधन हैं जिनसे आस्था के नाम पर भारी भीड़ को आकर्षित किया जाता है तथा उनका बौद्धिक तथा अन्य प्रकार का शोषण किया जाता है। ऐसी चमत्कारी घटनाएँ भारत अथवा हिन्दुओं के यहाँ ही नहीं होतीं, इनसे कोई भी नहीं बचा है।

जापान के अकीता में सिस्टर एग्नस कतुस्को को पवित्र मेरी स्वप्न में दिखने लगीं। 28 जून 1973 को सिस्टर एग्नस के बाएँ हाथ के अन्दर की ओर क्रास की शक्ल का घाव उभर आया और इससे काफी मात्रा में खून बहने लगा तथा सिस्टर को असह्य वेदना भी हुई। 6 जुलाई को एग्नस ने प्रार्थना करते हुए पवित्र मेरी के लकड़ी के स्टेचू से आवाज आती सुनी। उसी दिन कुछ अन्य सिस्टर्स ने स्टेचू के सीधे हाथ से खून की बूँदें टपकते देखीं। स्टेचू का यह घाव 29 सितम्बर तक रहा फिर गायब हो गया। परन्तु उसी दिन स्टेचू के माथे तथा गले से पसीना निकलने लग गया। दो वर्ष पश्चात् 4 जनवरी 75 को प्रतिमा रोने लग गयी। 6 वर्ष 8 महीने तक कुल 101 बार प्रतिमा ने रुदन किया, साथ ही यह भी हुआ कि सिस्टर एग्नस जो पूरी तरह बहरी थी, पूर्ण ठीक हो गयी। अकीता विश्वविद्यालय में प्रतिमा से निकले खून, पसीने की जाँच की बताते हैं तथा जाँच रिपोर्ट में सभी चीजों को मानवीय बताया गया, ऐसा कहा जाता है। लकड़ी की प्रतिमा से मानवीय उत्पाद? संभव नहीं। अगर रिपोर्ट सही है तो फिर एक अन्य घटना की तरह किसी की जालसाजी की इसमें पूरी–पूरी संभावना है। पर आगे चर्च कर्मचारियों के डी.एन.ए. का मिलान तथा तुलनात्मक शोध नहीं किया गया। जून 88 में पोप बेनीडिक्ट 16 ने इस चमत्कार पर अपनी मोहर लगा दी अतः अब ईसाई समुदाय इस पर कोई अंगुली नहीं उठा सकता। हमने ऐसे चमत्कार के पीछे इंसानी दिमाग की बात यूँ ही नहीं कही।

रोम में फोरिल में मार्च 2006 में सांता लूसिया चर्च के कस्टोडियन ने प्रसिद्ध किया कि पवित्र मेरी की प्रतिमा रोयी और उसकी आँखों से खून निकला। इस कस्टोडियन का नाम विन्सेंजो डी कोस्तेंजो था। यह कस्टोडियन अन्य की तरह भाग्यशाली नहीं निकला पुलिस ने इसकी सघन जाँच की तथा पाया कि विन्सेंजो डी कोस्तेंजो स्वयं अपना खून इस कार्य के लिए काम में लाया था। विधि विज्ञान विशेषज्ञों ने सघन जाँच में पाया कि प्रतिमा से जो खून का नमूना लिया था उसका डी.एन.ए. तथा विन्सेंजो डी कोस्तेंजो की लार का डी.एन.ए. आपस में मिलते थे। नतीजतन विन्सेंजो डी कोस्तेंजो पर अपवित्रीकरण का मुकद्दमा चलाया गया। ऐसी सैंकड़ों सहस्रों घटनाएँ होती रहती हैं। पर निश्चित सिद्धांत यह है कि कार्य–कारण सम्बन्ध और सृष्टिक्रम के विरुद्ध कुछ भी नहीं होता। भली प्रकार वैज्ञानिक तरीके से गंभीर व स्वतन्त्र जाँच की जाय तो हर चमत्कार के पीछे इंसानी दिमाग की मौजूदगी देखी जा सकती है अथवा कुछ एक प्राकृतिक ऐसी स्थितियाँ हो सकती हैं जिनकी अभी वैज्ञानिक व्याख्या नहीं की जा सकी है, पर ऐसे चमत्कार से आपका भाग्य बदलने वाला है यह तो कम से कम भूल जायँ। तनिक चतुराई से ऐसा भ्रम पैदा किया जा सकता है।

इटली के तीन वैज्ञानिकों ने चाक, हाईड्रेटेड लोहे तथा नमक के पानी से ऐसा मिश्रण बनाया जो कि तनिक हिलाने पर लहू जैसा गीला हो जाता है पश्चात् स्थिर होने पर सूख जाता है। एक अन्य वैज्ञानिक जान फिशर ने तेल–मोम तथा रंग को मिला ऐसा मिश्रण तैयार किया जो तापमान बढ़ने के साथ पिघलकर बहने लगता है।

विश्व में अनेक जगह ऐसे अंधविश्वासों से जन–जन को वैज्ञानिक तर्कों व प्रायोगिक तरीकों के सहाय से, बचाने के प्रयास चल रहे हैं। हमारे विचार से इस बौद्धिक विनाश को रोकना आर्यसमाज का प्राथमिक कार्य होना चाहिए। पर यह कार्य आज के युग में केवल लेखनी हिला देने से संभव नहीं है। ऐसी हर घटना के तार्किक व वैज्ञानिक विश्लेषण हेतु पूरा सुविधा सम्पन्न प्रकल्प तैयार किया जाकर, उस निष्कर्ष को जन–जन तक पहुँचाने का प्रबंध आज के युग की शैली से कदमताल करते हुए करने के ठोस प्रयास होने चाहिए।

– चलभाष– ०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य समाज किशनपोल बाजार, जयपुर में श्रावणी पर्व का हुआ भव्य आयोजन

आर्य समाज किशनपोल बाजार, जयपुर, राजस्थान में दिनांक 14 अगस्त, 2022 को श्रावणी पर्व बड़े धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर युवा विद्वान् आचार्य वरुण द्वारा यज्ञ सम्पन्न कराया गया। उसके पश्चात् आर्य समाज के सभागार में कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम में आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, तेजस्वी युवा संन्यासी आदित्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट, आर्य युवक परिषद् हरियाणा के पूर्व अध्यक्ष श्री रामनिवास आर्य आदि नेता विशेष रूप से सम्मिलित थे। मंच का सुन्दर संचालन आर्य समाज के संरक्षक एवं राजस्थान सभा के कार्यकारी प्रधान श्री ओम प्रकाश वर्मा ने किया।

स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि ऋषि दयानन्द जी के विचारों को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य तेज किया जाना चाहिए और लोगों को बुराईयों एवं

अन्धविश्वास से दूर रहकर कार्य करने की प्रेरणा देना अत्यन्त आवश्यक है।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट ने कहा कि पूरे प्रान्त में आर्य समाज के कार्य को तेज किया जायेगा तथा महर्षि दयानन्द जी के विचारों को जन–जन तक पहुंचाया जायेगा।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरियाणा के प्रधान तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि आजादी के आन्दोलन में आर्य समाज की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इसलिए हम सबको अपने महापुरुषों द्वारा किये गये कार्यों को स्वयं प्रचारित–प्रसारित करने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मंत्री और आर्य समाज किशनपोल के प्रधान श्री कमलेश शर्मा ने जहाँ सभी विद्वानों, संन्यासियों एवं आगन्तुकों का अभिनन्दन किया वहीं एक सुन्दर गीत प्रस्तुत करके सभी को मन्त्रमुग्ध कर दिया। इसी प्रकार संगीत के विद्यार्थी दीपेन्द्र कुमार ने भी अपने भजन प्रस्तुत किये।

प्रसिद्ध समाजसेवी श्री नरेन्द्र नांदल जी का जन्मदिवस सोल्लास मनाया गया

रोहतक के प्रसिद्ध समाजसेवी एवं वरिष्ठ अधिवक्ता श्री नरेन्द्र नांगदल जी का गत् 2 अगस्त, 2022 को उनके हिसार रोड, रोहतक स्थित निवास पर 92वाँ जन्मदिवस सोल्लास मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ सम्पादन बहन पूनम आर्या तथा बहन प्रवेश आर्या ने किया और स्वामी आर्यवेश जी का प्रेरणादायक प्रवचन हुआ। स्वामी जी ने श्री नरेन्द्र नांदल जी के सम्बन्ध में विचार रखते हुए कहा कि नांदल साहब दीनबन्धु सर छोटूराम के अनुयायी, आर्य

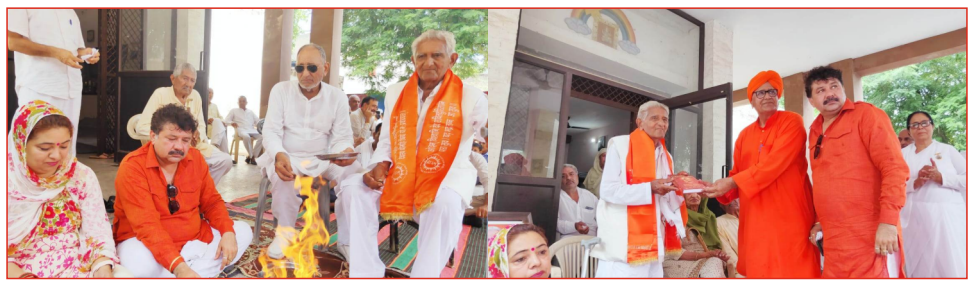

समाज की विचारधारा से जुड़े हुए प्रसिद्ध समाजसेवी हैं और जीवन के 92 वर्ष पूरे करने के बावजूद वे स्वस्थ रहते हुए अपने सामाजिक कार्यों को करते रहते हैं। उनका व्यक्तित्व अत्यन्त प्रेरणादायक है। वे जहाँ उच्चकोटि के बुद्धिजीवी तथा मनीषी हैं वहीं प्रसिद्ध दानवीर भी हैं और अनेक संस्थाओं को दिल खोलकर करोड़ों रुपया उन्होंने अपनी पवित्र कमाई में दान किया है। इस जन्मदिवस समारोह में अपनी शुभकामनाएँ देने के लिए हरियाणा के अनेक गणमान्य महानुभाव पधारे हुए थे जिनमें मुख्यरूप से चौ. वीरेन्द्र सिंह पूर्व केन्दीय मंत्री, चौ. युद्धवीर सिंह आई. ए. एस., डॉ. राज सिंह आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

आर्य समाज शक्तिनगर, दिल्ली के संस्थापकों में से एक स्व. श्री ओम प्रकाश गुप्ता एवं पूज्या माता लीलावती गुप्ता के सबसे छोटे सुपुत्र श्री विपिन गुप्ता जी के निधन पर शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन

आर्य समाज शक्तिनगर, दिल्ली–7 देश–विदेश में अपनी गतिविधियों के लिए विशेष पहचान रखती है। इस समाज के संस्थापकों में से एक स्व. श्री ओम प्रकाश गुप्ता (भाई जी) एवं पूज्या माता लीलावती गुप्ता के कनिष्ठ सुपुत्र श्री विपिन गुप्ता का गत् दिनों न्यू–जर्सी अमेरिका में निधन हो गया। उनकी स्मृति में 7 अगस्त, 2022 को आर्य समाज शक्तिनगर में शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। विदित हो कि श्री विपिन गुप्ता जिन्हें प्यार से विपिन राणा भी कहा जाता था। लम्बे समय से अमेरिका के न्यू–जर्सी शहर में रह रहे थे, उनकी धर्मपत्नी श्रीमती संगीता गुप्ता और उनकी एक मात्र सुपुत्री सैफाली गुप्ता भी उनके साथ ही रहती थी। लम्बी बीमारी के पश्चात् उनका गत् दिनों निधन हो गया। उनकी अन्त्येष्टि न्यू–जर्सी में ही उनके अग्रज (बड़े भाई) डॉ. भूपेन्द्र गुप्ता की देख–रेख में की गई। आर्य समाज न्यूयार्क के धर्माचार्य युवा विद्वान् डॉ. अमरजीत शास्त्री ने पूर्ण वैदिक रीति से उनकी अन्त्येष्टि कराई। 7 अगस्त, 2022 को विपिन गुप्ता जी के अन्य परिवारजनों की ओर से आर्य समाज शक्तिनगर, दिल्ली में शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें स्वामी आर्यवेश जी विशेष रूप से सम्मिलित हुए। स्वामी आर्यवेश जी का इस परिवार से लगभग 40 साल पुराना आत्मीय सम्बन्ध रहा है। उन्हीं की प्रेरणा से परिवारजनों ने यह शांति यज्ञ का कार्यक्रम आयोजित किया। शांति यज्ञ आर्य समाज शक्तिनगर के धर्माचार्य आचार्य प्रेमपाल शास्त्री ने सम्पन्न कराया तथा दिवंगत आत्मा के लिए विशेष प्रार्थना भी की।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने अपने आध्यात्मिक प्रवचन के माध्यम से मनुष्य जीवन की सार्थकता, जीवन और मृत्यु आदि विषयों पर सरल व्याख्या प्रस्तुत करते हुए परिवारजनों का ढांढस बंधाया और दिवंगत आत्मा को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वामी जी ने कहा कि श्री विपिन जी अत्यन्त सरल, सौम्य एवं मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे। उनमें अतिथि सत्कार की भावना कूट–कूट कर भरी हुई थी। वे अपने सभी भाई–बहनों में सबसे छोटे थे और सबके चहेते भी थे। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने विपिन गुप्ता जी के बड़े भ्राता डॉ. भूपेन्द्र गुप्ता द्वारा भेजा गया शोक संदेश भी पढ़कर सुनाया। उनका शोक संदेश निःसंदेह बड़ी भावना के साथ लिखा गया था और अपने छोटे भाई के लिए दी गई उनकी श्रद्धांजलि भावुकता से ओत–प्रोत थी।

इस अवसर पर बहन डॉ. स्नेहलता गुप्ता एवं बहन प्रोमिला के अतिरिक्त स्व. नरेन्द्र गुप्ता की धर्मपत्नी श्रीमती अंजू गुप्ता के अतिरिक्त विपिन जी के भतीजे श्री आदित्य गुप्ता, श्री अरुण गुप्ता व श्री दीवेश गुप्ता एवं अन्य परिवारजन उपस्थित थे। विपिन गुप्ता जी की भतीजी श्रीमती शालिनी गुप्ता एवं उनके पति श्री सुरेन्द्र कुमार ने पूरे कार्यक्रम का संयोजन किया। शालिनी गुप्ता तथा रचना गुप्ता ने अपने संस्मरण भी सुनाये। अन्त में डॉ. स्नेहलता जी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।